सेवा के साथ रूहानी स्वमान का भी बैलेन्स रखो

आज आप सबकी याद लेते हुए जब हम बाबा के पास गई तो आज बाबा का बहुत शक्ति और स्नेह का स्वरूप देखा। दोनों ही रूप से जैसे बाबा ने सामने मुलाकात की। फिर बाबा ने पूछा बच्ची क्या समाचार लाई हो?

तो मैंने कहा बाबा आज तो पाण्डवों की भट्ठी है, उनके लिए याद-प्यार लाई हूँ और इसके पहले सेवाओं के निमित्त हमारी मीटिंग्स भी बहुत अच्छी चली है, जिसमें कान्फ्रेन्स आदि के अनेक प्रोग्राम बने हैं। तो बाबा बहुत प्यार से सुन रहे थे और मीठा-मीठा मुस्करा भी रहे थे और ऐसे लग रहा था जैसे बाबा दृष्टि तो हमको दे रहे हैं लेकिन आप सभी को भी हमारे साथ मीठी-मीठी दृष्टि दे रहे हैं। उसके बाद बाबा ने कहा कि बापदादा बच्चों से यही चाहते हैं कि सेवा की वृद्धि के प्रोग्राम तो बहुत अच्छे बनाते हो लेकिन रूहानी स्वमान और सेवा में बैलेन्स आवश्यक है क्योंकि बापदादा और बच्चे भी जानते हैं कि अब समय की हालतों प्रमाण पहले स्व-स्थिति फिर सेवा की वृद्धि चाहिए। अब तो दिन प्रतिदिन ऐसी विचित्र-विचित्र परिस्थितियां आने वाली हैं जो आपके ख्याल-ख्वाब में भी नहीं होंगी, तो उन परिस्थितियों को सहज पार करने के लिए बच्चों की भी विचित्र आत्मिक स्थिति, अशरीरी स्थिति ज़रूरी है। बापदादा देख रहे हैं कि बच्चे हर प्रकार की बातों में नॉलेजफुल तो बहुत अच्छे बन गये हैं लेकिन पावरफुल स्थिति में अभी

अटेन्शन चाहिए। संकल्प परिवर्तन वा संस्कार परिवर्तन के लिए हरेक में पावरफुल कन्ट्रोलिंग पावर चाहिए, जो हर स्थूल-सूक्ष्म अपने सहयोगी कर्मचारी, कर्मेन्द्रियों पर राज्य अधिकारी बन सकें अर्थात् रूलिंग पावर कार्य में लगा सकें।

बापदादा तो समय प्रति समय भिन्न-भिन्न रूप से सेकेण्ड में बिन्दी लगाओ, फुलस्टॉप लगाओ, कहते रहते हैं लेकिन इस विधि को प्रैक्टिकल में लाने में समय लग जाता है। बाबा जानते हैं कि बच्चे बाप से प्यार होने के कारण संकल्प बहुत अच्छे करते हैं इसके लिए बापदादा दिल से ऐसे बच्चों को बहुत प्यार करते हैं, फिर भी लास्ट समय पास विद ऑनर बनने के लिए सेकेण्ड में पास्ट इज पास्ट और प्रेजेन्ट बहुत खुशनसीब, डबल लाइट अनुभव करें तब ही पास-विद्-ऑनर विजयी बन सकते हैं। इसीलिए बापदादा बच्चों को अब जल्दी-से-जल्दी ऐसे शक्तिशाली स्वरूप में देखने चाहते हैं। यह अभ्यास बहुत काल से चाहिए, न कि अन्त में हो जायेगा। ऐसे कहते बापदादा कुछ समय एकदम चुप हो गये और बहुत मीठा-मीठा मुस्करा रहे थे। मैं भी देखती रही। कुछ समय के बाद मैंने बोला, बाबा आप कहाँ थे!

बाबा मुस्कराते हुए बोले, बच्ची पाण्डव-पति अपने साथी पाण्डवों को देख रहे हैं। बापदादा का पाण्डवों प्रति एक श्रेष्ठ संकल्प है - ''हर बच्चा जैसे बाप को बहुत दिल से जान, पहचान, प्यार, सम्मान देते हैं, ऐसे ही हर बच्चे की विशेषता को जान, पहचान उसी विशेष स्वरूप से एक दो को स्वमान और सम्मान दें। एक दो के सहयोगी बन आगे बढ़ें और बढ़ावें। सदा सर्व के प्रति कल्याण का भाव, सहयोग की भावना और स्नेहमयी बोल द्वारा आगे उड़ते चलें। जैसे निमित्त विशेष दादियों का सिम्बल है, ऐसे सम्मान और स्वमान के बैलेन्स में दादियों समान सैम्पुल बनें''। इसके बाद बाबा ने सर्व पाण्डवों को बहुत मीठी दृष्टि देते बोला, पाण्डवों की चारों और के सेवा की हिम्मत और सहयोग देख बापदादा बहुत खुश हैं और दिल से प्यार करते हैं - ''वाह पाण्डव ब्रह्मा बाप के हमजिन्स वाह!''

उसके बाद बाबा ने कहा कि बच्ची हमारी हमजिन्स प्रति क्या सौगात ले जायेंगी ? ऐसे कहते बाबा ने दिखाया एक थाली में गुलाब के पुष्पों की डालियां थी। हमने जैसे एक डाली उठाई तो देखा कि गुलाब के फूल के पत्तों पर भिन्न-भिन्न आठों रंगों के हीरे बहुत सुन्दर चमक रहे थे और फूल के बीच में जो बूर होता है उसमें लिखा हुआ था ''अष्ट शक्तियों सम्पन्न रूहानी गुलाब''। तो बाबा ने कहा कि यह अष्ट शक्तियों का श्रृंगार सम्पन्न रूहानी गुलाब सभी बच्चों को सौगात देना, ऐसे सौगात लेते हम यहाँ पहुँच गये।